ॐ

आत्मसिद्धि (हिन्दी)

सदगुरु के उपदेश से, आया अपूरव भान ।
निजपद निज में अनुभवे, दूर हुआ अज्ञान ।।११९।।
प्रतिभासे निज-स्वरूप वह, शुद्ध चेतना रूप ।
अजर अमर अविनाशी अरु, देहातीत स्वरूप ।।१२०।।
कर्ता-भोक्ता कर्म का, विभाव वर्ते जहाँ ।
वृत्ति बही निजभाव में, हुआ अकर्ता वहाँ ।।१२१।।
अथवा निज-परिणाम जो, शुद्ध चेतना रूप ।
कर्ता-भोक्ता उसहि का, निर्विल्प स्वरूप ।।१२२।।
मोक्ष है निज-शुद्धता, हो जिससे वह पन्थ ।
समझाया संक्षेप में, सकल मार्ग निर्ग्रन्थ ।।१२३।।
अहो ! अहो ! श्री सदगुरु, करुणा-सिन्धु अपार ।
इस पामर पर प्रभु किया, अहो ! उपकार ।।१२४।।
क्या प्रभु-चरणोंमें धरूँ, आत्म से सब हीन ।
वह तो प्रभु ने ही दिया, रहूँ चरण आधीन ।।१२५।।
यह देहादि आज से, वर्तो प्रभु आधीन ।
दास, दास, मैं दास हूँ, आप प्रभु का दीन ।।१२६।।
षट् स्थानक समझाय कर, भिन्न बताया आप ।
म्यान जुदी तलवार वत्, यह उपकार अमाप ।।१२७।।

* * *